## शोध-सारांश

प्रत्येक उपलक्ष्य के लिए उसके अनुरूप गीत होता है। यहाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यवहृत गीत हैं। जब शिशु का जन्म होता है, तो उस खुशी में सोहर गाया जाता है। गीतों में लोरी का महत्त्वपूण स्थान है।

प्रस्तुत लघु शोघ-प्रबंध में हिंदी की बोलियों की लोरी को शामिल किया गया है। उनके विभिन्न पक्षों का विवेचन करने की कोशिश की गई है। लोरी का उद्भव व व्याप्ति मूलतः लोक में होता है  तथा लोरी का वास्तविक रूप लोक साहित्य भाषा प्रायः लोक ही होती है। भाषा का रूप आंचलिक व क्षेत्रीय होता है। इसीलिए हिंदी लोरियों की लोरी को समग्र रूप से यहाँ हिंदी की संज्ञा दी गई है। इस शोध से अनेक क्षेत्रों की लोरी के विभिन्न पक्षों का पता चलता है, समानता व असमानता का पता चलता है। लोरी शिशु को सुलाने के लिए गाए जाने वाला गीत होता है जिसमें माँ की ममता व वात्सल्य की कल-कल ध्वनि प्रवाहित होती रहती है। लोरी से शिशु के मन-मस्तिष्क पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है, जिससे शिशु का मानसिक एवं शारीरिक संपोषण होता है। दुनिया में गाए जाने वाले सभी गीतों लोरी को प्रारम्भिक गीत माना जा सकता है। लोरी माँ और शिशु अवर्णनीय संबंध होता है। जब शिशु रोता है, उसे नींद नहीं आती है, तब माँ गोद में लेकर हिलाती, डुलाती व थपकियाँ देती हैं, कुछ गाती गुनगुनाती हैं। इन उपक्रमों से शिशु का ध्यान केन्दित होता है, मन बहल जाता है, नींद आने लगती है, फिर सो जाता है। लोरी प्रायः दुनिया की सभी जगह व सभी भाषाओं में पाई जाती है।

भारत में गीत-शान की समृद्ध परंपरा है। यहाँ सालों भर कोई-न-कोई उत्सव व त्योहार रहता ही है। इस लघु शोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया है जिसका पहला अध्याय ‘लोक एवं लोक साहित्य की अवधारणा’ है। इसमें लोक का क्या आशय है; इसकी सीमा क्या हो सकती है इसकी विशेषताएँ क्या हो सकती हैं आदि विश्लेषण किया गया है। लोक साहित्य किसे कहते हैं, इनके विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। दूसरा अध्याय ‘संस्कृति एवं लोक संस्कृति: एक विवेचन’ है, जिसके तहत संस्कृति एवं लोक संस्कृति को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है, उसका विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है। संस्कृति एवं लोक संस्कृति के घटकों को दर्शाया गया है।

तीसरा अध्याय ‘लोकगीत एवं बाललोकगीत: एक परिचय’ नाम से है जिसमें लोकगीत को स्पष्ट करते हुए उसका वर्गीकरण किया गया है तथा लोक साहित्य में बाल लोकगीत के स्थान को दिखाया गया है। इसका चौथा व अंतिम अध्याय ‘हिंदी लोरी: एक सांस्कृतिक अध्याय’ है। इस अध्याय के माध्यम से हिंदी की बोलियों में व्याप्त लोरी की अंतर्वस्तु, सौंदर्यबोध व सांस्कृतिक पक्षों का जिक्र किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र की लोरी की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। लोरी के बहुत सारे कथ्य होते हैं, तो बहुत सारे असमानता क्षेत्र के अनुरूप खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, रिश्ते-नाते आदि की अपनी पहचान होती है, इन चीजों का लोरियों पर भी असर पड़ना स्वाभाविक-सी बात है। संस्कृति के अनेक पक्ष होते हैं। खासकर लोक

संस्कृतियों की अपनी खास विशेषताएँ होती हैं। अतः इसके अध्ययन से विविधताओं को समाजिक रूप में देख सकेंगे। अलग-अलग बोलियों में अभिव्यक्त लोरियों से उयस के सांस्कृतिक पक्षों का अवलोकन करने को मिलता है।